जो गाँव देश छोड़ दे वह बड़ा बुद्धिमान

लखनऊ , सितंबर ।अब लोग माइग्रेटिंग बड्र्स बन रहे हैं, जो गाँव जिला और देश छोड़ देते हैं उन्हें उसी क्रम में बड़ा बुद्धिमान घोषित कर दिया जाता है। उन्होंने आगे बताया कि हमारी शिक्षा व्यवस्था केंद्रीकरण को पढाती है और इससे मैनेजर तैयार होते हैं, ऐसे में कैसे विकेन्द्रीकरण पर बात की जा सकती है। यह बात यहाँ एएन सिन्हा इंस्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज के निदेशक डॉ डीएम दिवाकर ने कही जो जिला स्तरीय नियोजन की आवश्यकता को लेकर सेंटर फार स्टडी आफ डेवलेपमेंट सोसाइटीज और इन्क्लूसिव मीडिया फार चेंज ने दो दिवसीय मीडिया वर्कशाप में बोल रहे थे । वर्कशाप में नियोजन की आवश्यकताओं और इसके प्रचार प्रसार की संभावनाओं पर परिचर्चाओं में 27 और 28 सितम्बर को चार सत्र में बातें हुई। जिसमें प्रदेश के विभिन्न हिस्से से पत्रकारिता से जुड़े लोगों ने हिस्सा लिया था। वर्कशाप के पहले दिन उदघाटन सत्र में बोलते हुए इन्क्लूसिव मीडिया फॉर चेंज के निदेशक डॉ विपुल मुदगल इस पूरे सेमीनार के उद्देश्यों से प्रतिभागियों का परिचय करवाया। इसी सत्र में उत्तर प्रदेश के प्रमुख सचिव प्लानिंग संजीव नैयर ने नियोजन और कनवर्जेन्स या संगमन में मीडिया की भूमिका के पहलुओं को भी सबके बीच में रखा। जिसमें मीडिया के द्वारा सरकार की नियोजन सम्बन्धी योजनाओं को आम जन तक पहुंचाने आवश्यकता के बारें में बताया। इसी के साथ ही संयुक्त राष्ट्र और भारत सरकार के नियोजन और कार्यक्रम की नोडल अफसर मृदुला सिंह ने भी कार्यक्रम के परिचय और विचार प्रस्तुत किए ।

आरंभिक परिचय के बाद मीडिया वर्कशाप के पहले सत्र की अध्यक्षता हिन्दुस्तान के स्थानीय संपादक नवीन जोशी ने की थी। इस सत्र में पश्चिम बंगाल के पंचायत और ग्राम विकास के पूर्व सचिव तथा पूर्व में प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक रह चुके एम एन राय ने प्रतिभागियों के सामने नियोजन से भारत में विकेन्द्रीकरण के साथ नियोजन की ओर परिवर्तन पर एक प्रस्तुति का प्रदर्शन करते हुए विकेन्द्रीकरण के कई माडल दिखाए और सुझाए। उन्होंने बंगाल और केरल के माडल के फायदे और इससे ग्राम स्तर पर भागीदारी सुनिश्चित कराने की व्यवस्था को भी बताया। एएन सिन्हा इंस्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज के निदेशक डॉ डीएम दिवाकर ने जिला स्तरीय नियोजन में भागीदारी और इसकी आवश्यकता तथा जरूरत पर एक व्याख्यान दिया। डॉ दिवाकर ने कहा की उत्तर प्रदेश एक महादेश है यहाँ व्यवस्था के चार अलग जोन हैं जिसमे अलग अलग तरह से नियोजन की जरूरत होती है। उन्होंने कहा कि ग्राम स्तरीय नियोजन जिसके लिए सारी बात की जा रही है उसमे उसी ग्राम स्तर के ही आदमी को वहाँ के लिए योजना तय करने की जरूरत है। विकेन्द्रीकरण नियोजन में इन सब बातों का समावेश होना होगा। पलायन पर बोलते हुए डॉ दिवाकर ने कहा कि अब लोग माइग्रेटिंग बड्र्स बन रहे हैं, जो गाँव जिला और देश छोड़ देते हैं उन्हें उसी क्रम में बड़ा बुद्धिमान घोषित कर दिया जाता है। उन्होंने आगे बताया कि हमारी शिक्षा व्यवस्था केंद्रीकरण को पढाती है और इससे मैनेजर तैयार होते हैं, ऐसे में कैसे विकेन्द्रीकरण पर बात की जा सकती है। व्याख्यान और प्रस्तुति के बाद अध्यक्ष टिपण्णी और प्रतिभागियों के बीच से सवाल जवाब का क्रम हुआ जिसमे डॉ दिवाकर, पूर्व आईएएस अधिकारी एम एन रॉय तथा नवीन जोशी ने जवाब दिए।

दुसरे सत्र का प्रमुख विषय मीडिया खास तौर पर जिलों में मीडिया की विकेन्द्रीकरण नियोजन के अनुसार भूमिका पर चर्चा आयोजित की गई थी। इस सत्र की अध्यक्षता बीबीसी के संवादाता राम दत्त त्रिपाठी ने किया और इस चर्चा की शुरुआत में ही अध्यक्ष की ओर से प्रतिभागियों के सवाल और सुझाव आमंत्रित किये गए जिससे कार्यक्रम की शुरुआत उसी अनुसार किया जा सके। प्रतिभागियों के तरफ से मीडिया में रिपोर्टर की व्यक्तिगत और कार्यस्थल की समस्या, खबरों के छपने में सम्पादकीय हस्तक्षेप और सबसे बढ़कर मीडिया में बढ़ रहे पूंजीवाद पर सवाल आये इसी के साथ ही न्यू मीडिया की भूमिका और जिलों में पत्रकारों के ट्रेनिंग पर भी बात चर्चा में सामने आई। प्रेस कौंसिल आफ इंडिया के सदस्य तथा पत्रकार और टीवी एंकर प्रंजोय गुहा ठाकुरता ने नियोजन और विकास योजनाओं में मीडिया के कनवर्जेन्स पर बात शुरू करते हुए मीडिया के कार्पोरेटाईजेशन और समाचारों में बढते

हस्तक्षेप से निपटने के उपाय भी समझाए। प्रंजोय ने बताया कि यदि किसी पत्रकार की मुद्दे पर बनाई हुई उसके अखबार में नहीं छप रही हैं तो उसके लिए सही मौके का इंतज़ार कीजिये या किसी दुसरे मित्र पत्रकार को दीजिए जिससे खबर छपकर तो बाहर आएगी। मीडिया मालिकों पर भी प्रंजोय ने कई तथ्यों का खुलासा किया कि कई घोटालों में लिप्त लोग बड़े बड़े अखबार और चैनल चला रहे हैं। साथ ही बड़े कारपोरेट घराने तमाम न्यूज़ चैनलों और समाचार समूहों पर नियंत्रण कर चुके हैं। उन्होंने नाम लेकर उदहारण भी दिए। लखनऊ विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति डॉ रुपरेखा वर्मा ने मीडिया की जवाबदेही और मुद्दों को उठाने की क्षमता से अपनी चर्चा की शुरुआत मीडिया के प्रति सकारात्मक रुख से किया। डॉ रूपरेखा ने बताया कि आज मीडिया के ताकतवर होने हमें छोटी से छोटी घटनाओं की सूचना बहुत ही तीव्रता के साथ मिल जाती है। मीडिया में कई सारी खराबियां हो गई हैं परन्तु अभी भी निराशा का दौर नहीं आया है। इन्क्लूसिव मीडिया फार चेंज के निदेशक विपुल मुदगल ने विकेन्द्रीकरण नियोजन पर मीडिया कवरेज को लेकर अपने विचार व्यक्त किये।